

व्यंजित वि. (तत्.) जिसे व्यक्त, प्रकट किया गया हो, प्रकटित, संकेतित काव्य. जो व्यंजना शक्ति द्वारा गूढ़ रूप में इंगित किया गया हो।

व्यंतर पुं. (तत्.) 1. अंतर न होना, अंतरहीनता 2. भूत, पिशाच, यक्ष, राक्षस आदि।

व्यक्त वि. (तत्.) 1. अभिव्यक्त, जो प्रकट किया गया हो, जो कहा गया हो, कथित 2. स्पष्ट, प्रकट, दृश्य, निर्दिष्ट 3. दीक्षित साधु, विद्वान्, विष्णु।

व्यक्ताक्षेप पुं. (तत्.) काव्य. आक्षेप अर्थात् लंकार का एक भेद जिसमें कही जाने वाली बात को कहकर उसका चमत्कारपूर्ण वर्णन से निषेध किया जाता है।

व्यक्ताव्यक्त वि. (तत्.) व्यक्त और अव्यक्त, प्रकट और अप्रकट।

व्यक्ति स्त्री. (तत्.) 1. अभिव्यक्ति, व्यक्त होने की क्रिया, भाव प्रकटन 2. भूतमात्र 3. वस्तु पुं. 1. जिसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व हो, मनुष्य, आदमी, मनुष्य समाज, वर्ग, समष्टि में से प्रत्येक सदस्य, व्यष्टि 2. अपने गुणों के साथ व्यक्त या दृश्य हो सकने वाली वस्तु, गुणों का आधार स्वरूप मूर्तिमान् द्रव्य 3. पृथक्-पृथक् व्यक्ति, प्राणी, जीव।

व्यक्तिगत वि. (तत्.) किसी एक ही व्यक्ति से संबंधित, निजी, अपना, जो परिवार, समाज, वर्ग, समष्टि से भिन्न केवल एक व्यक्ति से संबंधित हो।

व्यक्तित्व पुं. (तत्.) 1. व्यक्ति का पृथक्, निजी अस्तित्व, सत्ता, आचरण 2. व्यक्ति का निजीपन, अपनापन 3. किसी व्यक्ति की निजी विशेषता 4. व्यक्ति होने की अवस्था, भाव, वैयक्तिकता।

व्यक्तित्वांतर पुं. (तत्.) व्यक्ति की भिन्नता, व्यक्ति के पूर्व स्वभाव या आचरण में भिन्नता आना, दूसरा व्यक्तित्व।

व्यक्ति-निरपेक्ष वि. (तत्.) 1. जिसका संबंध मन या इंद्रियों (अशरीरी) के द्वारा ग्रहण किए गए

तत्त्व से न हो, मनोबाह्य, विषयनिष्ठ, वस्तुगत 2. कर्ता से निरपेक्ष, किसी एक व्यक्ति से संबंधित न हो, व्यक्ति परक न हो।

व्यक्तिपरक वि. (तत्.) व्यक्तिगत, व्यक्ति से संबंधित, वैयक्तिक, किसी एक व्यक्ति से संबंधित, समष्टि या सामूहिकता से भिन्न।

व्यक्तिवाचक पुं. (तत्.) 1. व्यक्ति को सूचित करने वाला (शब्द या कथन) 2. एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान को इंगित करने वाला।

व्यक्तिवाद पुं. (तत्.) राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति की स्वायत्त तथा समाज निरपेक्ष और शासन-निरपेक्ष अधिकार की मान्यता।

व्यक्तिवृत्त पुं. (तत्.) 1. व्यक्ति से संबंधित समस्त विवरण, व्यक्ति-इतिहास 2. रोगी की समस्या, निदान, चिकित्सा, अनुभव, लक्षणों आदि की सामान्य जानकारी बताने वाला विवरण (अंग्रे.केश हिस्ट्री) 3. किसी व्यक्ति, समूह या समुदाय के संबंध में संकलित तथ्यों का क्रमबद्ध विवरण 4. किसी प्राणी के जीवन काल में अंडे आदि की अवस्था से वयस्क होने तक के विकास का संपूर्ण क्रम।

व्यक्तिश क्रि.वि. (तत्.) 1. एक-एक व्यक्ति से, प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से, अलग-अलग 2. एक के बाद एक, क्रमशः।

व्यग्र वि. (तत्.) विकल, घबराया हुआ, व्याकुल, परेशान, हतबुद्धि, समस्त, डरा हुआ पुं. विष्णु।

व्यजन पुं. (तत्.) पंखा, पंखे आदि से हवा करना।

व्यजनी पुं. (तत्.) वह पशु जिसकी पूँछ से चंवर बनता है।

व्यति पुं. (तत्.) 1. मिलान 2. विनिमय, बदला।

व्यतिकर पुं. (तत्.) 1. मिश्रण, मिलावट, समूह 2. संबंध, लगाव, व्यसन 3. आघात-प्रत्याघात 4. बाधा, रुकावट, अड़चन 5. विपत्ति 6. परिवर्तन 7. विपरीतता 8. संयोग, मिलन 9. अंत, नाश, विनाश 10. परस्पर आश्रित, अन्योन्याश्रित।